International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 294-296

प्रमुख संस्कृत नाटक, स्वप्नवासवदत्ता, प्रतिज्ञायौगन्धरायण अभिज्ञानशकुन्तला एवं मृच्छकटिक में स्त्री–शिक्षा

डॉ0 पल्लवी सिंह

वरिष्ठ प्रवक्ता (संस्कृत), के0आर0 महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मथुराए, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

शिक्षा शब्द संस्कृत के शिक्ष् धातु से निष्पादित है एक विशिष्ट शब्द है जिसका अर्थ है, सीखना एवं सिखाना। शिक्षा का लक्ष्य ज्ञान की प्राप्ति के साथ–साथ चरित्र का उन्नयन भी है। संस्कार का शिक्षा पर बड़ा प्रभाव होता है, सहज संस्कार इस जन्म में फलीभूत होते है। प्राचीन–काल में शिक्षा में नारी प्रगति के पथ पर थी। वहाँ नारी शिक्षा पुरूष शिक्षा के समान ही आवश्यक समझी जाती थी। स्त्री को आदर्श पत्नी एवं विदुषी बनाने के लिए उसका शिक्षित होना अनिवार्य था। स्त्री–शिक्षा की पूर्ण स्वत्ंत्रता थी। संस्कृत नाटकों में अनेक शिक्षित नारियों का वर्णन मिलता है। वस्तुतः तदयुगीन शिक्षा स्त्रियों के सर्वांगिक विकास में सहायक था। कला संगीत नृत्य आदि व्यावहारिक शिक्षा को स्त्री के लिए आवश्यक माना गया है। भास, कालिदास, शूद्रक, द्वारा विरचित नारी पात्र, तद्युगीन नारी शिक्षा की साक्षी है। साहित्य समाज का दर्पण है, साहित्य के माध्यम से इस युग की नारी की शैक्षणिक दशा का मूल्यांकन संभव है।

स्वप्नवासवदत्ता एवं प्रतिज्ञायौगन्धरायण नाटक में स्त्री शिक्षा सम्बन्धी विशेष जानकारी प्राप्त नहीं होती है। वस्तुतः इस युग में माता–पिता का परम कर्तव्य अपनी पुत्री को वैवाहिक जीवन में व्यवस्थित करने के लिए योग्य वर की खोज करना था। पुरूष उच्च–शिक्षा प्राप्त करता था अर्थात् वह विधिवत गुरुकुल में अध्ययन करता परन्तु राजपरिवारों की कन्यायें राजनैतिक सुदृढ़ता को प्रबलतम करने की कड़ी हुआ करती थी। उन्हें शिक्षा विशेषतः संगीतकला आदि क्षेत्र में प्राप्त होता था। वासवदत्ता वीणा–वादन सीखती है। कुलीन नारियों के लिये चित्रकला एवं संगीत में विशेष निपुणता अपेक्षित था। जब वासवदत्ता संगीत शिक्षा में रूचि दिखलाती है तो उसके वीणा–वादन हेतु संगीत शिक्षिका उत्तरा[1] की व्यवस्था की जाती है। यह इस बात को द्योतित करता है कि इस समय संगीत प्रशिक्षिकाओं की प्राप्ति संभव थी, परन्तु स्त्रियाँ इस व्यवसाय को अपने जीविकोपार्जन का साधन नहीं बनाती थी। महाराज महासेन वासवदत्ता के वीणा–वादन सीखने की बात पर रानी से पूछते हैं कि आखिर वासवदत्ता वीणा वादन के प्रति क्यों उत्सुक है। रानी अपनी पुत्री को सर्वकलाओं में निपुण एवं कौशल देखना चाहती है, वह उत्सुक है कि वासवदत्ता अपनी इच्छानुसार वाद्य–वीणा आदि की शिक्षा ले।[2] राजा महासेन पुत्री की इस इच्छा से अनधूए से लगते है जब महासेन से कहा जाता है कि पुत्री के लिए एक योग्य शिक्षक की व्यवस्था की जाए तो सहजतः राजा कह बैठते हैं कि अब उसकी अवस्था विवाह की है ऐसे में पति ही उसका गुरू एवं मार्ग–दर्शक होगा।[3] पति के प्रति आदर एवं पतिगृह के कार्यो को सुचारू रूप से करना ही वस्तुतः उसका परम कर्तव्य है।[4] स्त्री की शारीरिक सुन्दरता और सदाचार ही उनके सम्मान का कारण होता था। शिक्षा पति को वशीभूत करने का साधनमात्र था। नृत्य–संगीत आदि पर विशेष ध्यान दिया जाता और पुत्रियों को इस क्षेत्र में पारंगत होना अपेक्षित था। भास के नाटकों में वर्णित स्त्री शालीन, शिष्ट, व्यवहार कुशल एवं सुसंस्कृत है वस्तुतः शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन को सद्चरित बनाना है।

मृच्छकटिकम् की स्त्री–पात्र सभी व्यवहार कुशल एवं सुसंस्कृत दृष्टिगोचर होती है। वसंतसेना गणिका जो इस नाटक की नायिका है, कला निपुण एवं काव्यकला के प्रणयन में भी प्रवीण है। वह एक बुद्धिमती, विदुषी नारी है। इशारों से इंगित बातों को भी समझने की अद्भुत क्षमता इसमें है। इसी प्रतिभा विशेष के कारण वह एक गणिका होकर भी सभी के लिए विस्मय का कारण है। वह एक स्पष्टवक्ता एवं वाक्पटु स्त्री है।

मृच्छकटिक–कालीन समाज में विभिन्न प्रकार की कलाओं का विकास हो चुका था। नाट्यकला अपने समुन्नत रूप में थी। अतएव ऐसे विशालकाय रूपक के अभिनय के लिए रंगमंत्र भी सुसज्जित होता था। रंगमंत्र और नाट्य को विविध कलाओं का ज्ञान जन–सामान्य को था। विट यह कहता है कि वसन्तसेना ने नाट्यकला में निपुण होने के कारण ठगने में कुशलता को प्राप्त कर लिया है। अतः सहजतः वह अपने स्वर को परिवर्तित कर लेती है।[5] इस प्रकार अभिनय की गूढ़ता से स्त्रियां भी भिज्ञ थी।

संगीत का प्रचार प्रसार था। वेश्यालय में प्रवेश करते ही विदूषक युवतियों द्वारा प्रयुक्त मृदंग देखता है, जो घोर गर्जन कर रहे थे। मजीरों का भी प्रयोग किया जाता था। वेश्याओं की लड़कियाँ मीठी तान में गाती हुई नचाई जा रही थी। उन्हें श्रृंगार से पूर्ण अभिनय सिखाया जा रहा था। इस प्रकार कला सम्बन्धी शिक्षा पर ध्यान दिया जाता था। गणिकाएँ विशेष रूप से नृत्य संगीत में प्रवीणता लाती थी ताकि पुरूष को आकृष्ट किया जा सके।[6]

वसंतसेना के महल में निवास करने वाली स्त्रियाँ विविध वाद्यन्त्रों का प्रयोग करती हैं। गणिकाएँ शिक्षित होती थी। वसंतसेना के महल में पुस्तकों का चौकी पर बिखरा होना इस बात की पुष्टि करता है। स्वयं वसन्तसेना संस्कृत भाषा जानती है यद्यपि अन्य स्त्रियाँ प्राकृत भाषा बोलती थी, परन्तु प्रसंगानुसार भाषा परिवर्तन किया जाता था। विशेष रूप से शिक्षित महिलाएँ संस्कृत भाषा का प्रयोग करती थी। वसन्त सेना पंचम अंक में वर्षा–वर्णन संस्कृत में करती है। यह रचना कौशल एवं काव्यानुशीलन में उसकी विशिष्ट रूचि का परिचायक है। वह विदूषक मैत्रेय का स्वागत संस्कृत में करती है।

चित्रकला में अधिकांश नाटकों में नायिका को प्रवीण माना गया है। वसन्तसेना चारूदत्त का स्वयं चित्र बनाती है। वह काष्ठ और पत्थर की प्रतिमा भी बनाती है। उसके महल में गणिकाएँ चित्र–फलक लेकर भाग दौड़ करती है। शिक्षा के साथ नारी का व्यवहार कुशल होना, नारी के व्यावहारिक शिक्षा पर बल दिया गया है। मदनिका, दासी है पर उसकी कुशाग्र

बुद्धि और वाक्पटुता हमें आश्चर्यचकित कर देती है। उसकी यह कुशलता उसके सुसंस्कृत होने को प्रमाणित करता है। धूता अनेकों बाधाओं को सहजतः ग्रहण कर लेती है, पति के प्रति अपने कर्त्तव्य का वह सहजतः निर्वहन करती है, उसके उच्च विचार ही वसन्त–सेना से चारूदत्त के सम्बन्ध होने पर भी क्लेश से रोकता है।

हमारी संस्कृति की विशेषता रही है कि यहाँ स्त्रियों को सुसंस्कृत बनाने पर विशेष बल दिया गया है। मृच्छकटिक–कालीन समाज में बुढी गणिका से लेकर मदनिका तक वसन्त सेना से द्यूता तक सभी सभ्य एवं सद्चरित है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक में तीन युवतियाँ है और इन सभी का पालन पोषण तपोवन में होता है। हिरण और मयूर के बीच पलती बढ़ती इन नारी पात्रों को शिक्षित एवं सुसंस्कृत बताया गया है। अतिथि के प्रति सम्मान एवं यथोचित सत्कार इस बात की पुष्टि करता है। पुराण, महाकाव्य आदि ग्रन्थों की उन्हें जानकारी है, इसका दैनिक जीवन में उपयोग उन्हें विदित है। उनमें काव्यगत निपुणता है, वे कार्यकुशल एवं दक्ष है। उनके हास–परिहास के क्रम में हमें उनकी वाक्पटुता एवं चातुरी का पता चलता है।

जब शकुन्तला यह शिकायत करती है कि उसके अधोवल को अनुसूया एवं प्रियंवदा ने इतने जोर से बाँध दिया है– तो तुरन्त प्रियंवदन कहती है– वस्तुतः अघोवस्त्र का कसना उसका दोष नहीं वरन शकुन्तला के उभरते यौवन का परिणाम है। इसके लिए मुझे दोषी क्यों ठहराती हो।[9]

दूसरे अवसर पर शकुन्तला कहती है कि केशववृक्ष मानों सुन्दर लता से घिरा हुआ है। तुम्हारे सान्निध्य के कारण ऐसा है। शकुन्तला उत्तर देती है कि तुम्हारा प्रियंवदा नाम इसी कारण पड़ा है क्योंकि "तुम प्रिय भाषिणी हो"।[10]

शकुन्तला को शब्द–शास्त्र का ज्ञान है[11], दूसरा उदाहरण शब्द शास्त्रीय ज्ञान का वहाँ मिलता है जब शकुन्तला सफेद फूलों से लदी लता का नाम 'वनज्योत्स्ना' रखती है, वन की चन्द्रमा। उनके वार्ता एवं हास परिहास के सन्दर्भ में यह जानकारी मिलती है कि वो साहित्य के विविध क्षेत्रों एवं कला में निपुण है।[12]

कालिदास की सभी नायिकाएँ अप्रतिम सौन्दर्यवती है। लेकिन केवल सौन्दर्य से ही उन्होंने नायकों को नही जीता है उनका चातुर्य सम्भाषण, विशिष्ट शिष्टाचार सुसंस्कृत वर्तन भी उतना ही मोहक है जो बिना शिक्षा और संस्कारों के सम्भव नही। इस दृष्टि हमें ऐसा प्रतीत होता है कि कालिदास की स्त्री–शिक्षा विषयक दृष्टिकोण अत्यन्त उदार एवं उदात्त है।

शकुन्तला राजा दुष्यन्त के प्रति प्रेमासक्त है, वियोगरूपी प्रेमाग्नि में जल रही है। इस स्थिति में उसकी सखियाँ उसे प्रेम–पत्र लिखने को प्रोत्साहित करती है। प्रियंवदा और अनुसूया के अनुरोध पर वह अपनी मनःस्थिति राजा दुष्यन्त को प्रेम पत्र द्वारा विदित करवाती है।[13]

शकुन्तला का अंगार प्रसाधन करते समय उसकी सखियाँ, अनुसूया और प्रियंवदा उससे कहती है सखि, हमने कभी आभूषण पहने नहीं है। लेकिन चित्रकता से हमारी जो परिचय है, उसके आधार पर हम तुम्हें यह अलंकार पहनाती है।[14]

कालिदास की दृष्टि में स्त्रियों के लिए उद्यानकला भी महत्वपूर्ण कला दिखाई देती है। आगे चलकर संसार में पदार्पण करने वाली स्त्रियों को उद्यानकला की शिक्षा अवश्य मिलनी चाहिए। यह विचार कालिदास साहित्य में अप्रत्यक्षतया प्रकट हुआ है। छोटे पौधों को ठीक समय पर पानी देकर उनका संवर्धन करने से स्त्रियों के अन्तःकरण में शनैःशनैः अप्रत्यवात्सल्य की भावना अंकुरित होती है। ऐसी उनकी मान्यता है। इस सविस्तार सोदाहरण विवेचन से यही स्पष्ट होता है कि कालिदास को विविध विधाओं से और कलाओं से सम्पन्न सुसंस्कृत महिलायें ही अभिप्रेत थी। स्त्री शिक्षा के बारे में उनका दृष्टिकोण अतीव उदार विशाल था। कालिदासीय साहित्य में दिखायी देने वाली स्त्री जितनी शालीन है उतनी हैं तेजस्विनी, सुसंस्कृत और आत्मसम्मान को सुरक्षित रखने वाली है। ऋषि पिता कर्ण द्वारा प्रदत्त व्यावहारिक शिक्षा ने इन्हें शिष्ट एवं सुसंस्कृत बनाया है, उनकी अनुपस्थिति में आश्रम कार्यो का उचित निर्वहन उनकी कुशलता का परिचायक है। अतिथि के प्रति विनम्रभाव, व्यवहार एवं आचरण उनके अच्छे संस्कार एवं सदाचरण का प्रतीक है।

अतिथि के प्रति विशेष आदर अनुकम्पा एवं अतिथिः देवो भवः की प्रथा ही उन्हें अभीष्ट है। अनुसूया, प्रियंवदा और शकुन्तला सभी सदाचारी, अनुशासी एवं शिष्ट है जो उनके शिक्षित होने का परिचायक है।

शिक्षा वस्तुतः जीवन के मूल्यों आदर्शो एवं मान्यताओं का परिचय देती है। डॉक्टर राधाकृष्णन ने व्यक्त किया है– ''शिक्षा सूचना प्रदान करने एवं कौशलों का प्रशिक्षण देने तक सीमित नही है। यह व्यक्ति को मूल्यों का विचार भी प्रदान करता है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी व्यक्ति भी नागरिक है अतएव जिस समुदाय में रहे उसके प्रति उसका उत्तरदायित्व होता है।'' शिक्षा व्यक्ति में नैतिक और भौतिक दोनों प्रकार के जीवन को उत्तम बनाने के सम्मिलित उत्तरदायित्व को सहर्ष स्वीकार करने की प्रेरणा देता है। वासवदत्ता हो या शकुन्तला सभी स्त्रियाँ नैतिकता की प्रतिमूर्ति व उच्च आदर्शो से ओतप्रोत है। बिलमॉट आधुनिक शिक्षाविद् का कहना है–''शिक्षा जीवन की तैयारी है।'' यही तो प्राचीन साहित्य में उल्लिखित नारी पात्रों के माध्यम से हमें ज्ञात होता है। जीवन जीने की कला सांस्कृतिक मूल्यों, आदर्शो, नैतिकता एवं सत्यं शिवम सुन्दरम् के मूलमंत्रों को आत्मसात कर उत्कर्ष व उन्नति की शिखर को प्राप्त करना उसका लक्ष्य है। सत्य के साथ शिक्षा के तकनीकी आधार में परिवर्तन आया परन्तु मूलभूत तत्व अर्थात आत्मा तो व्यक्ति के आत्मीय गुणों एवं उसके संस्कार के परिष्कार को ही महत्व देता है।

संदर्भ

1. देवी–उत्तरायाः वैतालिक्याः सकाशे वीणां शिक्षितुं नारदीयां शतासीत्। प्रति. यौगन्धरायण – अंक II
2. राजा– कथमुत्पन्नोऽस्या गार्धर्वऽभिलाषाः।
   देवी–केनापि किलोद्धतेन काञ्चनमालां वीणा योग्यां कुर्वतीं प्रेक्ष्य शिक्षितुकामासीत्। प्रति. यौगन्धरायण – अंक II
3. राजा–सदृशं बाल्यस्य । प्रति. यौगन्धरायण – अंक II
   राजा–उपस्थित विवाहकालायाः किमि्दानीमाचार्येण पतिरेर्वेनां शिक्षमिष्यति। प्रति. यौगन्धरायण – अंक II
4. राजा– सर्वथा श्वसुर परिचरणसमर्थे तमसि वर्त्तते वासवदत्ता। प्रति. यौगन्धरायण – अंक II
5. इयं रङ्गप्रवेशेन कलानां चोपशिक्षया। प्रथम अंक मृच्छ कटि0 पृष्ठ 42, 82
6. विदूषकः– इमा अपराः कुसुमरसमत्ता इव मधुकार्योऽति मधुरं प्रगीता ।
   गणिका दारिका नर्त्यन्ते नाटयं पाठयन्ते श्रृगांरम्।
   मृच्छ0 कटि0 IV पृष्ठ 292
7. एतैरेव यदा गजेन्द्रमलिनैराहमातलम्बोदरै गर्जदि्भः सतडिद्वलाकश बलैर्मेघैः सशल्यं मनः। तत्किं प्रेषितमर्तृवध्यपटहो हा–हा–हताशो बकः प्रावृट् प्रावृडिति ब्रवीति शठधोः क्षारं क्षते प्रक्षिपन् मृच्छकटिकम् V अंक

वसंतसेना– आये मैत्रेयः। (उत्थाय) स्वागतम्, इदमासनम् अत्रोपविश्यताम् । IV अंक पृष्ठ 309

8. वसंतसेना–(चेटि मदनिके! अपि सुसदृशीयं चित्राकृतिरार्थयारूदत्तस्य।) IV अंक
9. शकुन्तला– सखि अनुसूये। अतिपिनद्धेन वल्फेन प्रियम्वदा नियन्त्रिताऽस्मि।शिथिलय तावदेनम्। अनुसूया – तथा
10. प्रियंवदाः– (साहसम्) अत्र पयोधरविस्तारयितृ आत्मनो यौवनमुपालभस्व! मां किमपालभसे! अभिज्ञान प्रथम अंक 65
    प्रियंवदा – हला शकुन्तले । अत्रैव तापन्भुइते तिष्ठ यावत्त्वयोपगतयां लतासनाथ इवायं केसरवृक्षकः प्रतिभाति। शकुन्तला– अतः खलु प्रियंवदाऽसि त्वम्। सिद्धान्त कौमुदी 64.2953
    प्रियंवदाा– अरुणो द्विजतोऽजन्तस्य च मुमागमः स्यात् खिदन्ते उत्तरपदे न त्वव्ययस्य। शित्त्वाच्छंवादि। सिद्धान्त कौमुदी 64.2942
11. अनुसूया– इला शकुन्तले। अनभ्यन्तरं खल्लवाधां मढनगतस्य वृत्तान्तस्य किन्तु यादृशी इतिहास निबन्धेषु कामयमानानामवस्था श्रूयते तादृशी ते पश्यामि। अभिज्ञा0 चतुर्थ अंक
12. तव न जाने हृदयं मम पुनः कामो दिवापि रात्राकनिर्घृण तपति बलीयस्त्वमि वृत्तमनोरथान्य अंगानि।। अभिज्ञान तृतीय अंक
13. सख्यौ– अये अनुपमुक्तभूषणोऽयं जनः। चित्रकर्मपरिचयेनाग्ङषु आमरण विनियोगं कुर्वः। अभिज्ञान IV
14. पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु वा नादत्ते प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम् । आघे 9 : कुसुमप्रवृत्तिसमये यस्या भवत्युत्सकः। सेयं भाति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैऽनुज्ञायताम्। अभिज्ञान शांकु0 4/8